विचार बिन्दु

काम-क्रोध और लोभ, ये तीनो नरक के द्वार है। –गीता

सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव के दौर में मीडिया अशांत

मीडिया और समाज दोनों ही पिछले दो दशकों में आये सामाजिक-आर्थिक बदलावों और तकनीकी विकास के कारण अपने आप को उथल-पुथल में पाकर अशांत हैं। सामाजिक भूमिका की अपनी समझ और बाजार के दबाव के परस्पर विरोधी हितों के बीच समाचार संगठनों में ऐसा तनाव हमेशाही बना रहा है। विशेषज्ञों ने परंपरागत रूप से इसे पत्रकारिता-उन्मुख और व्यवसाय-उन्मुख श्रेणियों में विभाजित किया है। उनका कहना है कि जैसे-जैसे प्रतियोगिता कड़ी होती जाती है और आर्थिक विचार तेजी से केंद्र में आ जाते हैं तब पत्रकारिता और व्यवसाय के बीच संतुलन बनाये रखने के लिए संपादकीय नेतृत्व की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। नई परिस्थितियों में काम करना और समाचार प्रस्तुतीकरण के कारोबारी माहौल को लगातारबदलना जब जरूरी हो जाता है तब समाचार संगठनों के भीतर व्यावसायिक क्षमता की आवश्यकता भी बढ़ जाती है। इस प्रकार बदलते मीडिया परिदृश्य में संपादकीय टीम के नेता से यह अपेक्षा बढ़ जाती है कि वह अपनी पत्रकारिता के साथ व्यावसायिक दक्षता का भी कौशल रखे और उसका प्रदर्शन करे क्योंकि किसी भी समाचार संगठन में चुनौतियों से निपटने के लिए प्रथम उसी की जिम्मेदारी बनती हैं। नये अर्थतंत्र में समाचार संगठन के नेतृत्व की जिम्मेदारी अब उसी को सौंपी जाने लगी है जो बाज़ार को साध सके। यह स्थिति पत्रकारी नैतिकता और बाजार की मांग के बीच तनाव पैदा करती है। मीडिया जगत में यह तनाव समाचारों के चयन और प्रस्तुतीकरण में प्रकट होता है। बाज़ार की ताकतों का हावी होना परंपरागत पत्रकारिता के लोगों को अवांछनीय लगता है।

सर्वत्र महसूस किए जा रहे इस तनाव को समझने के लिए पहले यह समझना आवश्यक है कि मीडिया से हमारा आशयक्या है? मीडिया अर्थात् माध्यम। माध्यम का स्वयं का अपना कोई रूप नहीं होता है। वह एक मंच होता है जिस पर अनेक लोग और संस्थाएं लोकसंचार की भूमिका में सक्रिय होते हैं। यह लोकसंचार सर्व लोकहित का हो सकता है, व्यावसायिक हित वाला हो सकता है तो असामाजिक और आतंकी हितों को साधने वाला भी हो सकता है, जैसा कि सोशल मीडिया के उपयोग का हमारा अनुभव बताता है। सही बात तो यह है कि जब हम मीडिया की भूमिका की बात करते हैं तब मीडिया का उपयोग करने वालों की भूमिका की बात करते हैं। इसलिए विस्फोटक हालात तक पहुंचे हुए आर्थिक तनाव को समाचार माध्यमों के कर्मियों की भूमिका के परिपेक्ष्य में समझना समीचीन होगा। पहले जब अधिकतर समाचार माध्यम छपे हुए समाचार पत्र ही हुआ करते थे तब यह विधा पत्रकारिता कहलाती थी। मगर कालांतर में यंत्र तकनीक के जबर्दस्त विस्तार के चलते जनसंचार के अन्य माध्यमों - रेडियो, टीवी और इंटरनेट - ने सारा परिदृश्य बदल दिया है। इस तकनीकी विस्तार ने मनोरंजन की दुनिया से आगे जाकर समाचार जगत में प्रवेश करलिया है जिससे खेल के नियम आमूल बदल गए हैं। यंत्र तकनीक का यह विकास बाज़ार जनित है। इसका एक मात्र उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच बना कर उपभोग की वस्तुओं और सेवाओं के लिए ग्राहक जुटाना होता है। इस नए परिवेश में समाचार माध्यमों को ही नहीं समाचारों को भी मनोरंजक बनाने और उसी तरह उन्हें प्रस्तुत करने की कला सीखते हुए पत्रकार मीडियाकर्मी बन गए जिन्हें नये गुर सिखाने के लिए प्रचार या विज्ञापन विधा के लोगों का दखल स्वाभाविक रूप से होना ही था। इससे पत्रकारिता पूर्वकाल जैसी नहीं रही और मीडियाकर्म में बदल गई। मीडिया पर निगाह रखने वाले बहुत से लोग मानते हैं कि इस कारण पुराने जमाने की पत्रकारिता में जो एक वैचारिक ईमानदारी का आग्रह हुआ करता था वह शनैः शनैः तिरोहित होता चला गया है।

पत्रकारिता को यदि हम एक मानवीय और सामाजिक संस्कार मान लें तो गलत भी नहीं होगा। संस्कारवान समाचार मीडिया, भले ही वह किसी भी काल का हो, उसकी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका सच्ची जानकारी देने की मानी जाती रही है। मगर इसके लिए पहली जरूरत होती है मीडियाकर्मी के खुद के पास सच्ची जानकारी का होना। कभी पत्रकार से यह अपेक्षा होती थी कि वह इतना काबिल हो कि वह सूचनाओं के सत्य की सभी परतें पहचान सके और उन्हें बिना किसी मिर्च मसाले की लेई में लिपटाये प्रस्तुत कर सके। वही अपेक्षा आज के मीडियाकर्मी से करना गलत भी नहीं है। इसीलिए समाचार माध्यमों से सामाजिक सरोकारों की अपेक्षा की जाती हैं। मीडियकर्मी इस भूमिका में तभी रह सकता है जब वह चिरस्थाई विपक्ष की तोहमत झेल कर भी आम जन के साथ खडा रहे। मीडियाकर्मी एक ऐसे शिक्षक की भूमिका में भी होता है जो सत्य को उजागर करे तथा लोगों के सम्मुख ऐसी अप्रीतिकर बातें रखने में भी गुरेज नहीं करे। मगर मीडिया संस्थानों का नया आर्थिक मॉडल मीडियाकर्मी को वस्तुओं के लिये बाज़ार बनाने की नई भूमिका में धकेलता है। बाज़ार की ताकतें यह काम बड़ी चतुराई से करवाती हैं। ऐसी ताकतों के हाथों में खेलता हुआ मीडियाकर्मी ऊपर से तो जनहित का सबसे बड़ा पैरोकार नज़र आता है मगर वह वास्तव में बाज़ार का हित साध रहा होता है। इससे वह खुद भी बेखबर होता है। प्रत्येक तेजी से आगे बढने वाला संस्थान समाचार को बिक्री योग्य उत्पाद बना कर उसे मनोरंजक और ध्यान आकर्षित करने वाला बनाने की एक दूसरे से होड़ करता नज़र आता है। खबरों को रंग देकर लोगों में कौतूहल जगाया जाता है ताकि पढने-देखने वालों को उनमें रस आये और वे उससे जुडे रहें। इस जुडे रहने के समय में बाज़ार अपना माल बेचने के प्रपंच रचता है। हम जानते हैं कि किसी अखबार की लागत का अधिकांश हिस्सा उसे अपने पाठक से उसके दाम के रूप में नहीं मिलता। लागत और बिक्री मूल्य के बीच का अंतर विज्ञापनों से होने वाली आय से पाटा जाता है। ऐसे में यह तनाव और अधिक गंभीर हो जाता है। डिजिटल मीडिया में प्रिन्ट मीडिया जैसा लागत-बिक्री का यह तनाव तो नहीं होता किन्तु उसके नए प्रकार के व्यावसायिक मॉडल की अपनी शर्तें और जरूरतें होती हैं जहां ग्राहक को लगातार ललचाना होता है। या तो ग्राहक उसके कंटेन्ट का पैसा दे या उसे विज्ञापन से आय हो। दोनों ही परिस्थितियों में ग्राहक को लुभाने के जबरदस्त इंतजाम करने पड़ते हैं। यह स्थिति तनाव पैदा करती है। ऐसे तनाव के माहौल में समाजशास्त्री पत्रकारिता को बचाने की बात करते हैं।

> **कभी पत्रकार से यह अपेक्षा होती थी कि वह इतना काबिल हो कि वह सूचनाओं के सत्य की सभी परतें पहचान सकें और उन्हें बिना किसी मिर्च मसाले की लेई में लिपटाये प्रस्तुत कर सकें। वही अपेक्षा आज के मीडियाकर्मी से करना गलत भी नहीं है। इसीलिए समाचारमाध्यमों से सामाजिक सरोकारों की अपेक्षा की जाती हैं।**

यह तो सभी मानते हैं कि स्वतंत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता लोकतंत्र की महत्वपूर्ण जरूरत है। यह भी कि लोकतंत्र को बचाना है तो असहमति का होना जरूरी है। असहमति को अभिव्यक्ति का अधिकार भी बताया जाता है। अभिव्यक्ति की आज़ादी की बात करते हुए बहसों में अकादमिक लोगों के साथ मीडिया को अपनी राय के हिसाब से नियंत्रण करने वाले भी कूद पड़ते हैं और एक नया तनाव पैदा करते हैं। हम जानते हैं कि डिजिटल मीडिया के जमाने में इन दिनों सामाजिक सरोकारों के किसी मुद्दे पर बात करना आसान नहीं रहा है। ज्यों ही किसी ने ज़बान खोली इसे राजनीति के दो में से किसी एक पाले में खड़ा कर दिया जाता है। जब ऐसा किया जाता है तब संवाद नहीं रह जाता। भिडंत हो जाती है। यहां लगने लगता है कि असहमति लोकतंत्र का जरूरी पहलू है तथा संवाद की अहमियत है जैसे आदर्श वाक्य धरे रह जाते हैं। स्वतंत्र मीडिया और लोकतंत्र कैसे और क्यों संकट में है यह खासकर उदारवादियों के लिए अधिक चिंता का विषय लगने लगा है। संपूर्ण उदारवादी लोकतांत्रिक प्रणाली उन दार्शनिक विचारों पर आधारित है जो हमें 18वीं शताब्दी से विरासत में मिली है। खास कर व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा का विचार उदार वैश्विक नज़रिये को रेखांकित करता है, जैसे मतदाता सबसे बेहतर जानता है, ग्राहक हमेशा सही होता है, सुंदरता देखने वाले की निगाह में होती है, अपने दिल की मानें और वह करें जो मन को अच्छा लगे। ये सभी उदारवादी मॉडल, जो हमारी राजनीतिक और आर्थिक प्रणाली की नींव हैं, वे मानते हैं कि अंतिम अधिकार व्यक्तियों की स्वतंत्र पसंद है। दिलचस्प बात यह है कि मुक्त बाज़ार का भी यही मंत्र है, ग्राहक हमेशा सही होता है। स्वतंत्र इच्छा की घोषणा इस दार्शनिक और आध्यात्मिक नज़रिये पर आधारित है कि ग्राहक की पसंद मानव की स्वतंत्र इच्छा का प्रतिनिधित्व करती है, जो दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण अधिकार है इसलिए हमें इसे मानना चाहिए। राजनीतिक क्षेत्र में यही बात कुछ इस तरह से कही जाती है कि मतदाता सबसे बेहतर जानता है। परंतु जब चुनावों के परिणाम विचारों के विपरीत आते हैं तब उसी मतदाता को भ्रम में पड़ना बता दिया जाता है। जानकार कहते हैं कि स्वतंत्र इच्छा हमेशा एक मिथक ही रही है। इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं रहा। विज्ञान तो प्रकृति में केवल दो प्रकार की प्रक्रियाओं को जानता है। एक तो नियतिकारक (डिटर्मिनिस्टिक) तथा दूसरी आकस्मिक (रेंडम)। कहते हैं कि आकस्मिक और संभाव्यता को स्वतन्त्रता नहीं कह सकते। मानव में इच्छाशक्ति होती है। वे फैसला लेते हैं। वे अपनी पसंद बनाते हैं लेकिन क्या वे सच में अपनी इच्छानुसार चयन कर सकते हैं, यह बड़ा सवाल हमेशा से ही बना रहा है। विचारवान लोग कहते हैं कि पसंद स्वतंत्र नहीं होती। मीडिया के जरिये ग्राहक की पसंद तैयार की जाती है जिसके लिए आज डिजिटल तकनीक नये-नये औजार तैयार कर रही है। दबाव में आया मीडिया और मीडियाकर्मी इनका उपयोग करने के लिए अभिशापित हैं।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

"खबर लहरिया" साक्षर महिलाओं के बदलाव की कहानी : ऑस्कर में नॉमिनेशन का सम्मान

राजेन्द्र मोहन शर्मा

साक्षर महिलाओं की टीम की ओर से संचालित अखबार जो अब पोर्टल पर आ गया है 'खबर लहरिया' के नाम से विख्यात समाचारों की दुनिया ने महिला शक्ति की पहल का इतिहास रच दिया है। महज दो दशक की यात्रा में खबर लहरिया ने सिद्ध कर दिया कि सामाजिक सरोकारों पर आधारित पत्रकारिता की जाए तो लोगों का ध्यान ही नहीं जाता अपितु वह यथोचित सम्मान भी हासिल करता है। इसी क्रम में खबर लहरिया की डॉक्यूमेंट्री 'राइटिंग विद फायर' ने ऑस्कर अवाड्र्स में नॉमिनेशन हासिल कर धमाका कर दिया।

खबर लहरिया हिन्दी की उपबोली बुन्देली में प्रकाशित एक आंचलिक समाचार पत्र था जिसका प्रकाशन 2002में महज दो पन्नों से हुआ और फिर आठ पन्नों के अखबार के रूप में आगे बढा। अखबार आदिवासी और ठेठ ग्रामीण महिलाओं से जुड़ा था जिसमें सभी महिलाएं भी पत्रकार हैं, प्रकाशक हैं ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 2009 में यूनेस्को साक्षरता पुरस्कार जीत कर अपने इरादे जता दिए थे। यही अखबार अब डिजिटल न्यूज चैनल दलित ग्रामीण महिलाओं द्वारा 'निरन्तर' नामक एन.जी.ओ. संस्था के प्रोत्साहन से निकाला जाता है। 'राइटिंग विद फायर' डॉक्यूमेंट्री को ऑस्कर में एंट्री मिलने के बाद से यह लगातार चर्चा में है। यहां संपादन और समाचार संकलन का पूरा काम महिलाएं करती हैं।

आरम्भिक समूह से जुडी मीरा कहती हैं कि शुरुआत में संवाददाता के रूप में गांव की गरीब महिलाओं के जुड़ने का उनके परिवार व समाज के लोग ही विरोध करते थे लेकिन अब यह विरोध कम हो गया है। अखबार के रूप में 2015 तक इसकी प्रसार संख्या साढे चार हजार हो गई थी और पाठकों की संख्या बीस हजार से अधिक। मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश के अलावा बिहार में भी अनेक जिलों से निकलने लगा। इसकी सम्पादक कविता बुन्देलखण्डि कहती हैं अखबार 2002 में शुरू हुआ और दो दशक के सफर में आज जा पंहुचा आस्कर के नोमिनेशन तक, यह सब महिलाओं की सामूहिक शक्ति का नतीजा है।

आस्कर के 94वें एकेडमी अवॉर्ड्स के नॉमिनेशन्स की लिस्ट ज्यों ही सामने आई भारत की 'राइटिंग विद फायर' डॉक्यूमेंट्री ने ऑस्कर 2022 की फाइनल नॉमिनेशन में जगह बना कर सब को चौंका दिया । जबकि जय भीम और मरक्कर जैसी दो फिल्में जो पहले से इस लाइन में थी फाइनल नॉमिनेशन में जगह हासिल नहीं कर पाई। 'राइटिंग विद फायर' डॉक्यूमेंट्री एक अखबार की कहानी है। आस्कर अवार्ड नोमिनेशन लिस्ट में किसी अखबार की कहानी को जगह मिलना अपने आप में एक चमत्कार कहा जा रहा है।

राइटिंग विद फायर डॉक्यूमेंट्री दलित, अल्पसंख्यक और आदिवासी महिलाओं द्वारा चलाए जाने वाले अखबार खबर लहरिया की कहानी है 30 जनवरी 2021 को रिलीज हुई, इसे सुमित घोष और रिंतु थोमस ने निर्देशित किया है और प्रॉड्यूस भी। यह डॉक्यूमेंट्री दलित, अल्पसंख्यक और आदिवासी महिलाओं द्वारा चलाए जाने वाले अखबार खबर लहरिया की कहानी है। कई सालों तक गांव की महिलाओं ने मोबाइल फोन व सीमित संसाधनों के सहारे रिपोर्टिंग की और इस अखबार के जरिए क्राइम, महिलाए संबंधी और दलित-पिछड़ों समेत कई मुद्दों को कवर किया। इन महिलाओं के जुनून और इरादे ने वो कर दिखाया जो पढ़े-लिखे बड़े-बड़े दिग्गज नहीं कर पाए। इसी असली कहानी पर सुमित घोष और रिंतु थोमस ने राइटिंग विद फायर डॉक्यूमेंट्री बनाई थी।

रिंतु थोमस की राइटिंग विद फायर डॉक्यूमेंट्री के बाद इस खबर लहरिया अखबार की खूब चर्चा हो रही है। इस न्यूजपेपर का नाम खबर लहरिया है। यह अखबार सिर्फ खबरें नहीं छापता बल्कि बल्कि महिलाओं और बच्चों को जीवन में आगे बढने के उनके इर्दगिर्द की सफल कहानियों के माध्यम से जबरदस्त ढंग से प्रेरित करता है। इसी जज्बे की कहानी को बयां करती यह डॉक्यूमेंट्री विश्वभर में प्रशंसा प्राप्त कर रही है।

साल 2002 में खबर लहरिया चित्रकूट समेत बुंदेलखंड के कई जिलों में प्रकाशित होने लगा था। यह ग्रामीण महिलाओं में जरूर लोकप्रिय होने लगा था ऐसा इसीलिए हुआ क्योंकि इस अखबार में महिलाएं खबरें भेज और प्रकाशित कर रही थीं । जिन्हें खुद हिंदी या इंग्लिश नहीं आती थी। इन महिलाओं को सिर्फ अपने काम-काज और रहन-सहन की स्थानीय बोली आती थी। उन्होंने अपने मुद्दों को अपनी देसी भाषा में उठाया। उनकी बोली की ताकत ने ही आज उनकी कहानी को देश-विदेश में काफी लोकप्रिय बना दिया है। बुंदेली के बाद अवधि और भोजपुरी भाषाओं में इसे प्रकाशित किया जाने लगा। 40 ग्रामीण महिलाओं का एक समूह बना और इन्होंने अखबार के हर छोटे बड़े काम को करना शुरू किया। इस सफर की शुरुआत करने वाली महिला मीरा जाटव, शालिनी जोशी और कविका बुंदेलखंडी ने साथ मिलकर की। कविता एक दलित परिवार से आती हैं उनकी शादी महज महज 12 साल की उम्र में हो गई वे पढाई पूरी नहीं कर पाई थी। बस इसी कसक ने कविता को हौसला और विचार दिया। अखबार खबर लहरिया की सबसे खास बात ये है कि इनकी पूरी टीम महिला पत्रकारों से जुडी है।

ये महिला पत्रकार समाज के अनछुए मुद्दे, सरकार के वादे, भ्रष्टाचार, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, दलित-आदिवासी के विषय और गरीबों व महिलाओं से जुड़े मुद्दों को कवर करती हैं। साल 2015 में ये प्रिन्ट अखबार तो बंद हो गया लेकिन इसकी वेबसाइट शुरू की गई। अब ये पूरी तरह से डिजिटल तौर पर काम करता है और स्थानीय भाषाओं में शुरू किया गया ये सफर, आज इंग्लिश भाषा में भी खबरें परोसता है।

खबर लहरिया के पत्रकार अपने क्षेत्र में अन्याय की जांच और दस्तावेजीकरण भी करते हैं। वे स्थानीय पुलिस बल की अक्षमता पर सवाल उठाती हैं। जातीय और लिंग आधारित हिंसा के शिकार लोगों की सुनवाई करती हैं और उनके साथ खड़ी होती हैं।

वस्तुत: लहर खबरिया ने यह सिद्ध कर दिया है कि भाषाएं किसी भी सफलता और विकास की राह को नहीं रोक सकती हैं। बुंदेलखंडी, अवधि और फिर न जाने कितनी ही क्षेत्रिय बोलियों और भाषाओं में अखबार के डिजिटल प्लेटफॉर्म ने न केवल अपनी आवाज पूरी दुनिया में पहुंचा दी है बल्कि महिलाओं के मुद्दों को सशक्त ढंग से उठाया है । ऑस्कर में फाइनली नामांकित होने के लिए हम सब पाठक वर्ग लहर खबरिया अखबार में काम कर रही बहनों का स्वागत करते हैं और उन्हें बधाई देते हैं। इस अखबार ने राजस्थान सहित अन्य प्रांतीय और क्षेत्रीय बोलियों के लिए भी नए रास्ते खोल दिए हैं। जरूरत है गैर सरकारी संस्थाओं और साक्षर तथा सशक्त महिलाओं के द्वारा पहल करने की है।

राजेन्द्र मोहन शर्मा,
साहित्यिकार, शिक्षाविद
एवं चिन्तक

गंगाजल और तुलसी

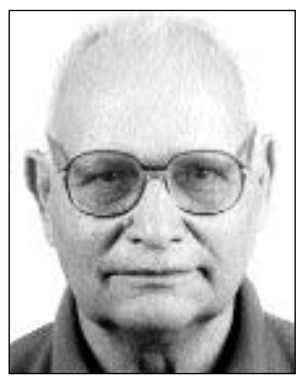

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

1950 के दशक में कोलकत्ता के मेडिकल कॉलेज में जब रोगी मर्णासन्न हो जाता था तो मरीज के रिश्तेदारों को बता कर हम उसके बेड हैड टिकट पर लिखते थे गंगाजल और तुलसी दें। तब घर पर भी आखरी समय पर गंगाजल और तुलसी देने का प्रचलन था। आज भी दी जाती है, गांवों में, जहां चिकित्सा सेवायें उपलब्ध नहीं है। उसके बाद अस्पताल में प्रचलन शुरू हुआ कोरामिन इन्जेक्शन का। जब मरीज की सांस उखड़ती और हृदय गति लड़ख़ड़ा कर बंद होती तब कोरामिन का इन्जेक्शन दिया जाता, यहां तक कि सीधा दिल के अन्दर कोरामिन इन्जेक्ट किया जाता था। आक्सीजन दी जाती थी। पेशेन्ट आक्सीजन पर है का माने होता था कि मरीज आखरी सांसे गिन रहा है।

लेकिन अब मेडिकल सांईस ने काफी प्रगति कर ली है। हर अंग का कार्य करने के लिए क्रत्रिम उपकरण उपलब्ध हैं। सांस के लिए वेन्टीलेटर; हृदय गति लड़खड़ाने पर पेसमेकर। दिल की धड़कन बंद होने को पहले मौत का लक्षण माना जाता था, अब नहीं। धड़कन रुकते ही सी पी आर - कार्डियो पलमोनेरी रिसेसिटेशन शुरू होता है। हर रोगी पर ऐसा करना अब लाजमी है। आवश्यक हो तो बिजली का झटका दे कर भी कोशिश की जाती है। रक्त में आक्सीजन आदि का स्तर मापने का ऐसा यंत्र उपलब्ध है जो पलपल का स्तर दिखाता है। गुर्दे काम करना बंद कर दें तो डायालिसिस मशीन उपलब्ध है। रक्त चाप बनाये रखने को दवाऐं व एओर्टिक पम्प है। सब अंगों को सपोर्ट करने के यंत्र हैं, बस नहीं है तो मस्तिष्क को चालू रखने या फिर से चालू करने का कोई यंत्र। अंत समय में हर विशेषज्ञ अपनी सेवायें देता है। इसी लिए आधुनिक अस्पताल में आज रोगी मल्टीऑर्गन फेलियोर से मरते हैं केवल हार्ट फेलियोर से मरने नहीं दिया जा सकता। आधुनिक अस्पताल के मोक्षद्वार - आई सी यू - में मोक्ष को, स्तर अनुरूप भव्यता प्रदान की जाती है। गंगाजल तुलसी से अब मोक्ष नहीं मिलता। नोरएड्रेनिल, डोपामिन (रक्तचाप बढाने को), मेरुपेनम (उच्चस्तरीय महंगी एन्टीबायोटिक) के बिना अब मोक्ष नहीं मिलता।

किसी प्रकार के आधात या शॉक से अगर हटात् हृदय गति रुक गई है, दिल की धड़कन बंद हो गई है, व्यक्ति संज्ञाशून्य मृत (मर्णासन्न) है तो तुरंत सी पी आर विधि से उसे जीवित किया जा सकता है। मरे हुए व्यक्ति को जीवित करना चमत्कार था। बड़ी आसान विधि है। सीने पर सामने से दबाव डालिए जिससे उसके पीछे स्थित हृदय, स्टर्नम और रीड के बीच भिंचे। एक मिनट में जितनी बार दिल धड़कता है उतनी बार ऐसा करने पर रक्त संचार चालू रहेगा, विशेष कर मस्तिष्क को, और अंग जीवित रहेंगे। साथ ही नाक बंद कर मृत के मुंह में फूंक मारिए ताकि उसके फेफड़े हवा से भर जायें। उतनी बार करिये जितनी बार एक मिनट में सांस ली जाती है। संचारित होते रक्त का आक्सीकरण होता रहेगा। अंगो को, हृदय को भी, प्राणवायु मिलती रहेगी। समयोपरांत धड़कन वापस चालू हो सकती है।

आई.सी.यू. में सी पी आर में स्वांस, यंत्र से दी जाती है, अन्यथा विधि वही है। अब हर मरणासन्न रोगी की सी.पी.आर. की जाती है। करनी भी चाहिए। ऐसी ही अन्य विधियों का सामुहिक प्रयोग अंत समय में होता है, मल्टीडिसिप्लनेरी ट्रीटमेन्ट से मल्टीऑर्गन फेलियोर टालने के लिए। ऐसा न करना नेग्लिजेंस की श्रेणी में आता है। कोर्ट कचहरी से बचने के लिए डॉक्टर इसी में अपना मोक्ष ढूंढते हैं। ऐसा करना ही सेहत के लिए भी लाभकारी है।

डॉ. श्रीगोपाल काबरा
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

पश्चिम मध्य रेलवे पूरे भारत में अव्वल

कोटा, (निसं)। रेल पर वार्षिक रिपोर्ट के दौरान त्रैमासिक आंकलन के साथ केपीआई में अप्रैल से जनवरी अवधि के दौरान की गई विभिन्न कार्यों में रेल राजस्व के मदों का आंकलन किया गया गौरतलब है कि पश्चिम मध्य रेल द्वारा वार्षिक रिपोर्ट के त्रैमासिक आंकलन के साथ माह जनवरी 2022 में केपीआई रिपोर्ट के अंतर्गत पूरे भारतीय रेलवे में शीर्ष स्थान पर है। इसके अंतर्गत रेलवे राजस्व, सामान्य कार्य व्यय, संड़ी रेल राजस्व एवं पूंजीगत व्यय के साथ बेहतर प्रदर्शन किया। वित्तीय प्रदर्शन से भारतीय रेल के राजस्व में अधिक वृद्धि करना एवं व्यय को कम करने का फायदा होता है। संरक्षा प्रदर्शन में बेहतर आंकलन के साथ शत प्रतिशत प्रदर्शन किया गया है। रेलवे विद्युतीकरण, रेल लाइन दोहरीकरण, न्यू रेलवे लाइन, गेज परिवर्तन, प्राइवेट साइडिंग का कमीशन। मानवीय संसाधन के अंतर्गत रेलवे के कार्यों का अध्ययन कर उनका युक्तिकरण करके बेहतर प्रदर्शन किया गया है। इसके साथ ही साथ रेलवे कर्मचारियों की गुणवत्ता का भी आंकलन किया जाता है।

आदिवासी महाकुंभ बेणेश्वर मेले में हजारों भक्त उमड़े

महंत न श्रीफल उछाले जिन्हे भक्तों ने प्रसाद के रूप में लिया

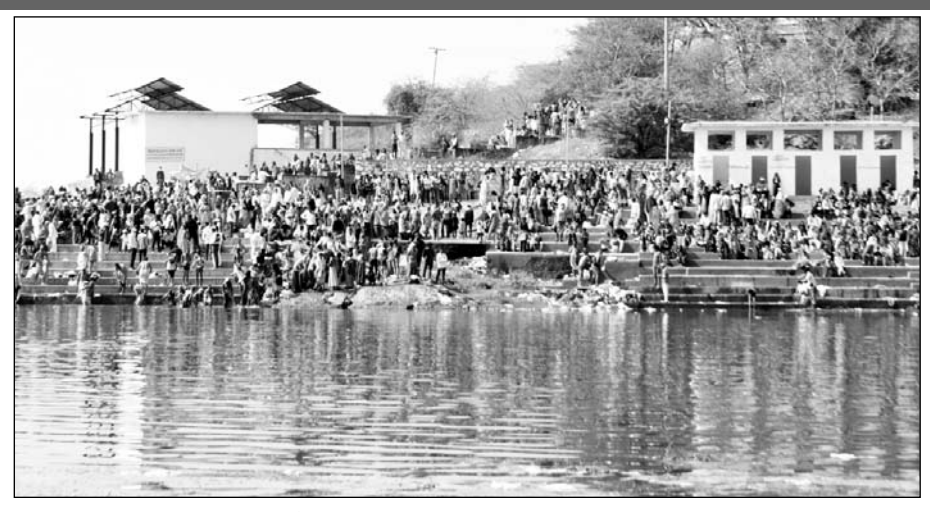

बेणेश्वर मेले में शाही स्नान के दौरान हजारों श्रद्धालु उमड़े।

डूंगरपुर, (निसं)। शहर से 70 किमी दूर बेणेश्वर धाम पर बुधवार को माघ पूर्णिमा पर आदिवासियों के महाकुंभ में हजारों भक्त आए। सोम, माही, जाखम नदियों के संगम के कारण इसे वागड का हरिद्वार कहते है। महाकुंभ 300 साल से चली आ रही परंपराओं का साक्षी है।

महाकुंभ में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश सहित देशभर के कोने-कोने से आए भक्तों ने त्रिवेणी संगम के नदी घाटों पर पवित्र स्नान किया। नदी में सुबह उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया । शिव मंदिर, राधा कृष्ण मंदिर, ब्रह्मजी मंदिर, वाल्मीकि मंदिरों में दर्शनों के लिए भक्तों की कतारें रही। मुख्य आकर्षण महंत अच्युतानंद महाराज की पालकी यात्रा रही। साबला श्रीहरि मंदिर से रवाना हुई। 5 किलोमीटर की पालकी यात्रा में हजारों श्रद्धालु जुडते गए। पालकी की धाम पर पंहुचते ही जयकारे लगाते हुए पालकी का स्वागत ओर दर्शन किए।

महंत की पालकी सोम, माही, जाखम नदियों के त्रिवेणी संगम बेणेश्वर धाम आबूदर्रा घाट पर पहुंची। हजारों भक्तों के साथ महंत अच्युतानंद

■ कोरोना में छूट के बाद लगी दुकानें

महाराज ने आबूदर्रा घाट पर त्रिवेणी संगम में शाही स्नान किया। महंत ने श्रीफल उछाले, जिसे श्रद्धालुओं ने प्रसाद के रूप में लिया। आबूदर्रा घाट राजा बलि के यज्ञस्थली के रूप में प्रसिद्ध है। सालभर में जिन परिवारों में लोगों की मौत हुई है उनकी अस्थियों का त्रिवेणी संगम में विसर्जन किया।

कोरोना से छूट मिलने के बाद धाम पर बडी संख्या में दुकानें लगी। खाने-पीने से लेकर खेतीबाडी, खिलौने, श्रृंगार, बर्तन की खरीद दारी हुई। मेले में करीब 500 से ज्यादा छोटी-बडी अस्थाई दुकानें लगी। सरकार की ओर से छूट कर बाद मेले में दुकानें लगाई गई है।

राशिफल

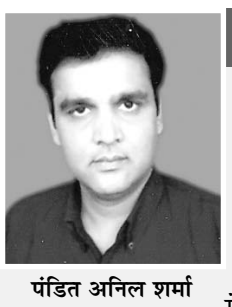

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 17 फरवरी, 2022

फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2078, मघा नक्षत्र सांय 4:11 तक, अतिगंड योग सांय 7:46 तक, बालव करण दिन 10:34 तक, चन्द्रमा सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।
आज माघी मासय (दक्षिण भारत में) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:30 तक, चर 11:17 से 12:41 तक, लाभ-अमृत 12:41 से 3:28 तक, शुभ 4:52 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:06, सूर्यास्त 6:16

मेष
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। परिवार में आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

वृष
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। चलते कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कर्क
वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा। वाणी की कटुता के कारण परिवार में मतभेद बढ़ सकते हैं। जीवनसाथी से वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सुगमता से बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि का भय बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।